अध्याय 17

अब्राहम के साथ परमेश्वर की एक देश की प्रतिज्ञा

सत्रहवें अध्याय में, परमेश्वर ने एक और वाचा की बात की जो वह अब्राहम और उसके परिवार के साथ बांधेंगे। खतने की विधि या रीति परमेश्वर की वाचा के एक चिन्ह के रूप में अब्राहम और उसके वंश को दी गयी थी। परमेश्वर की योजना में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के लिए अब्राहम को एक नया नाम दिया गया (17:5), और सारा का नाम भी बदल दिया गया (17:15)।

अब्राम के लिए नया नाम (17:1-8)

[1]जब अब्राम निन्यानवे वर्ष का हो गया, तब यहोवा ने उसको दर्शन देकर कहा मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर हूं; मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा। [2]और मैं तेरे साथ वाचा बान्धूंगा, और तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा। [3]तब अब्राम मुंह के बल गिरा: और परमेश्वर उससे यों बातें कहता गया, [4]देख, मेरी वाचा तेरे साथ बन्धी रहेगी, इसलिये तू जातियों के समूह का मूलपिता हो जाएगा। [5]सो अब से तेरा नाम अब्राम न रहेगा, परन्तु तेरा नाम अब्राहम होगा; क्योंकि मैं ने तुझे जातियों के समूह का मूलपिता ठहरा दिया है। [6]और मैं तुझे अत्यन्त ही फुलाऊं फलाऊंगा, और तुझ को जाति जाति का मूल बना दूंगा, और तेरे वंश में राजा उत्पन्न होंगे। [7]और मैं तेरे साथ, और तेरे पश्चात पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरे वंश के साथ भी इस आशय की युग युग की वाचा बान्धता हूं, कि मैं तेरा और तेरे पश्चात तेरे वंश का भी परमेश्वर रहूंगा। [8]और मैं तुझ को, और तेरे पश्चात तेरे वंश को भी, यह सारा कनान देश, जिस में तू परदेशी हो कर रहता है, इस रीति दूंगा कि वह युग युग उनकी निज भूमि रहेगी, और मैं उनका परमेश्वर रहूंगा।

आयत 1. अध्याय सत्रहवें में वर्णित घटनाएं उन बातों के तेरह साल बाद हुई जो अध्याय 16 में पाई जाती है; **अब्राम निन्यानवे वर्ष का था** जब **दुबारा परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया** (देखें 16:16)। उसने स्वयं की पहचान **सर्वशक्तिमान परमेश्वर** के रूप में की אֵל שַׁדַּי यहवह (*एल शदाय*[1])। जिस प्रथम नाम से कुलपति ने उसे जाना वह *(एल शदाय)* था न की यहोवा (*याह*/ प्रभु)।[2]

एल शदाय शब्द के उद्गम की जानकारी अस्पष्ट है, और इसके ठीक-ठीक अर्थ को सर्वसम्मति नहीं है। एक ईश्वरीय उपाधि के रूप में *(एल शदाय)* का ज़िक्र अड़तालीस बार पुराने नियम में आया है, और सात बार इसकी शुरुवात *(एल)* के साथ हुई है (*एल शदाय;* 17:1; 28:3; 35:11; 43:14; 48:3; निर्गमन 6:3; यहेज. 10:5)। KJV बाइबल *(शादाय)* को "सर्वशक्तिमान" के रूप में अनुवाद करती है, LXX के आधार पर, जहाँ यह शब्द παντοκράτωρ, *(पनटोक्राटर)* अनुवाद किया गया है जिसका अर्थ है "सर्वशक्तिमान।" बेबीलोन के ताल्मूड (संत चरित्र का संग्रह) यह दर्शाते है की रब्बियों ने इसका यह अर्थ निकाल "एक ऐसा व्यक्ति जो स्वयं योग्य या स्वाधीन है।"[3] दूसरों का यह मत है *एल शदाय* का वास्तविक अर्थ "परमेश्वर, एक पर्वत" है उसके नाम के साथ पर्वतों जोड़ा जाता था, जहाँ माना जाता है कि कनानी देवता वास किया करते थे।[4]

भले ही बहुत से अनुमान और परिकल्पनाएं *(शदाय)* के मूल शब्द या उद्गम के विषय में की गयी है, बहुत से अध्यात्मिक सन्दर्भ यह सुझाव देते है कि परमेश्वर के ऐश्वर्य और सामर्थ्य पर ज़ोर नामों के द्वारा ही दिया गया है (निर्गमन 6:3; गिनती 24:4, 16; अय्यूब 11:7)। इसके अलावा, *शदाय* शब्द अकसर संतानों के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा और परमेश्वर की इच्छा से राष्ट्र के उदय के साथ जोड़ा जाता है (28:3; 35:11; 43:14; 48:3; 49:25)। *एल शदाय*, जो इतिहास का भी प्रभु है, वह एक बाँझ स्त्री को भी फलदायक बना सकता है। वह जातियों को खड़ा कर सकता है और प्रकृति को भी अपनी इच्छा के अनुसार अपने वश में कर सकता है।

"परमेश्वर ... सर्वशक्तिमान" के रूप में अब्राहम पर स्वयं को प्रकट करने के बाद, यहोवा ने कुलपति अब्राहम को आज्ञा दी, **"मेरी उपस्थिति में चल और सिद्ध होता जा"** पहली बार इन वचनों को सुनने से ऐसा प्रतीत होता है मानो परमेश्वर अब्राहम को एक पापरहित सिद्ध जीवन जीने की बुलाहट दे रहें हो। इसलिए कि इस तरह का जीवन जीना असंभव है, और ऐसे जीवन के लिए ज़ोर देने से अब्राहम अवश्य ही आने वाले समय में कुंठा से और निराशा से भर जाता। पर इसके बदले परमेश्वर के वचन "मेरी उपस्थिति में चल" का वास्तविक अर्थ यह था कि अब्राहम अपने जीवन में परमेश्वर की उपस्थिति के विषय हमेशा सचेत और सतर्क रहे। परमेश्वर चाहते थे कि अब्राहम इस बात को जान लें कि अब वह उसके साथी और सहायक है जो न कभी उसे छोड़ेंगे न त्यागेंगे (देखें इब्रा. 13:5, 6)। "सिद्ध होने" תָּמִים *(थामिम)* का अर्थ पापरहित सिद्ध जीवन कतई नहीं है; पर इसका मतलब यह है कि एक व्यक्ति "सारे मन" और "सम्पूर्णता" से परमेश्वर की अपेक्षाओं और आज्ञाओं के प्रति समर्पण दिखाए[5] (6:9 पर टिप्पणी देखें)।

यह दाऊद के जीवन से भली भाँति प्रकट होता है, जिसने इस बात का पालन किया की उसकी "विधियों" से हट न गया परंतु "उसके साथ खरा *[थामिम]* बना रहा" (2 शमूएल 22:23, 24)। इसका अर्थ यह नहीं है कि दाऊद

ने कभी पाप किया ही नहीं, क्योंकि बाइबल उसके द्वारा किए कुछ घोर अपराधों को प्रकट करती है (2 शमूएल 11:1-27; भजन संहिता 51:1-19)। हालांकि दाऊद के जीवन की कहानी यह दर्शाती है कि वह कई बार पाप में गिरा परन्तु वह हमेशा परमेश्वर का जन बनकर रहना चाहता था। क्योंकि दाऊद का पाप उसकी जीवनशैली नहीं था; वह एक भूल या पथभ्रष्टता थी जिसमें उसने अपने चरित्र के विपरीत कार्य किया। पाप दाऊद के परमेश्वर के प्रति सच्चे समर्पण के विरुद्ध था और जिसके बाद वह पछताया और परमेश्वर से क्षमा मांगी (2 शमूएल 12:13; भजन 32:1, 2, 5)।

परमेश्वर की आज्ञा यह थी कि अब्राहम पूरे समर्पण के साथ उसकी उपस्थिति में यहोवा की सेवा और आज्ञा मानते हुए विश्वासयोग्यता से चले। अब्राहम हर बार परमेश्वर की अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतर पाया (देखें 12:11-13; 20:1-3); परंतु जब-जब उसने पाप किया और परमेश्वर के प्रति पूर्ण आज्ञाकारिता दिखा पाने में असफ़ल हुआ, वह अस्थाई रूप से अपने चरित्र के बाहर जाकर और परमेश्वर के प्रति अपने हार्दिक समर्पण के विरुद्ध पेश आ रहा था। परमेश्वर की साथ उसका संबंध (धार्मिकता) विश्वास के द्वारा अनुग्रह पर आधारित था, न कि सिद्ध कार्यों पर। जैसा बाद में दाऊद के साथ भी हुआ, परमेश्वर ने अब्राहम को अपने सिर्फ़ अपने ही अनुग्रह के कारण क्षमा किया और उसके पाप की गिनती नहीं की (रोमियों 4:1-8)।

आयत 2. परमेश्वर अपनी **वाचा** अब्राहम के साथ क्यों **स्थापित करना** चाहता था यह स्पष्ट नहीं है, इसलिए कि उसने पहले ही 15:18 में यह कर लिया था। "स्थापित करने" के लिए जो शब्द यहाँ इस्तेमाल हुआ है वह נָתַן *(नाथन,* "देना"); पर इस बात को तेरह वर्ष बीत चुके थे, इसलिए शायद वह प्रारंभिक वाचा को पुनः "पक्का" या "दृढ़" करना चाहता था। अगर ऐसा है तो परमेश्वर अपनी वाचा का नवीनीकरण और अब्राहम के साथ की गयी शुरुवाती वाचा में वृद्धि कर रहा था।

आरंभिक वाचा एक तरफ़ा थी, जिसमें वाचा पूरी करने की अनिवार्यता परमेश्वर पर थी। इसमें ऐसा कोई अनुबंध नहीं जिसमें अब्राहम की आज्ञाकारिता की मांग की गयी हो। फिर भी, इस सन्दर्भ में परमेश्वर वाचा को तीन तरह से विभाजित करता है, जिसमें हर पक्ष को कुछ ज़िम्मेदारियां दी गयी थी। उसने भाग की शुरुवात ऐसे की "देख, मेरी [यहोवा] वाचा ..." (17:4-8), "तू भी [अब्राहम] ..." (17:9-14), और "सारै भी ..." (17:15, 16)। फिर, इससे पहले की परमेश्वर हर पक्ष के लिए कुछ अनिवार्य बातें बोले, उसने यह कहा कि अब्राहम का प्रमुख दायित्व उसकी निष्कलंक आज्ञाकारिता का आचरण होगा। अब्राहम को परमेश्वर पर विश्वास करना था कि वह वाचा में अपनी भूमिका, अपने समय और इच्छा के अनुसार निभाएगा। दूसरे शब्दों में, उसे परमेश्वर से आगे जाने या उसकी योजनाओं में किसी तरह का हस्तक्षेप करने की आवश्यकता नहीं होगी।

इसके पहले के अध्याय में, शंका बहुत ही स्पष्ट थी क्योंकि सारा संतान उत्पन्न नहीं कर सकी। अब समस्या और बढ़ गयी थी क्योंकि अब्राहम निन्यानवे वर्ष की आयु में नपुंसक या पुरुषत्व हीन था। जहाँ तक प्राकृतिक ढंग से संतान उत्पन्न करने की बात थी, दोनों का शरीर मानो मृतकों के सामान ही था (रोमियों 4:19)। सार ये है कि, परमेश्वर ने वंश बढ़ने का हर मानवीय उपाय या रास्ते को बंद कर दिया था। अब वे अपने विश्वास पर छोड़ दिए गए थे (गला. 3:23); परमेश्वर पर विश्वास करने के अलावा उनके पास कोई और चारा नहीं था। अब्राहम के सामने ऐसी बाधा थी जो अजेय प्रतीत हो रही थी, इसी बीच यहोवा पुनः एक प्रतिज्ञा करता है **"तेरे वंश को अत्यन्त ही बढ़ाऊंगा।"**

आयत 3. परमेश्वर का साक्षात्कार होने और उसकी प्रतिज्ञा सुनने की बाद, **अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा**। यह अपने से महान को आदर देने का भाव है (37:9, 10; 42:6; 44:14; 48:12; 2 शमूएल 9:6; 1 राजा 18:7)। इन मामले में श्रेष्ठ या महान **परमेश्वर** था। झुका या गिरना यहोवा के आदर सम्मान और आराधना के दौरान दर्शाने वाला भाव था (24:52; निर्गमन 34:8; लैव्य. 9:24; यहोशू 5:14; यहेज. 1:28)। यह मुद्रा शब्दों से भी अधिक अर्थपूर्ण या सार्थक थी, अब्राहम ने नम्रता और परमेश्वर के वचनों को सुनने की इच्छा का प्रदर्शन किया।

आयत 4. शुरुवाती शब्दों से ही, बातों के लहजे ये स्वर को निर्धारित कर दिया गया था। इस **वाचा** से सम्बंधित परमेश्वर की ज़िम्मेदारियों को पहले बताया गया है: देख, **"मेरी वाचा ...।"** पहले की गयी ईश्वरीय वाचाओं के विपरीत, यहोवा ने न सिर्फ़ इस बात का आश्वासन दिया कि वह (अब्राहम) बहुत सी "संतानों" (15:5), के साथ "एक महान राष्ट्र" (12:2) **का जनक** होगा[6] पर यह भी की वह उसे कई जातियों का पिता बनाएगा। वाचा के प्रति परमेश्वर के समर्पण को दर्शाने के लिए, उत्पत्ति के लेखक ने इस विषय की अब्राहम की वंशावली की कई शाखाओं तक खोज की है। कई "राष्ट्र" बनेंगे जो उसकी पत्नी कतूरा (25:1-4), उसके पुत्र इश्माएल (25:12-18), और उसके पोते एसाव से उत्पन्न होंगे (36:1-43)।

आयत 5. इस प्रतिज्ञा का महत्व स्पष्ट रूप से तब और नज़र आया जब कुलपति का नाम **अब्राम** אַבְרָם *(अब्राम)* जिसका अर्थ है "महान पिता" से बदल **अब्राहम** कर दिया गया। हालाँकि बाद के नाम के मूल शब्द या अर्थ को लेकर विद्वानों के विचारों में असमानता है, ऐसा लगता है जैसे परमेश्वर शब्दों से खेल रहा था "अब्राहम" אַבְרָהָם *(अब्राहम)* और אַב-הֲמוֹן *('अब हमोन)* के साथ, जिसका अर्थ है **बहुत से लोगों का पिता**।[7]

प्राचीन पूर्वी संस्कृति के अनुसार, नाम में परिवर्तन का महत्व आज के समय से कहीं अधिक था। आज, हम किसी को कोई पूर्वज का नाम उनके सम्मान में दे देते हैं या किसी नायक के नाम पर रख देते हैं, और कभी कोई नाम इसलिए भी दे दिया जाता है क्योंकि वह सुनने में अच्छा लगता है। पुराने नियम के काल में,

नाम का बहुत महत्व हुआ करता था; वे अकसर माता पिता की बच्चे से की ज़ारी रही अपेक्षाओं को दर्शाते थे, और कभी-कभी वह उस बालक या बालिका के भविष्य को भी व्यक्त करते थे। नाम के परिवर्तन का अर्थ था एक व्यक्ति के व्यक्तिगत चरित्र या भविष्य में उसके द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका को बदलना।

आयत 6. अब्राहम के विषय में, परमेश्वर ने उसके नाम के परिवर्तन के कारण को बताया: वह उसे बहुत से "राष्ट्रों का पिता" ठहराते हुए **अत्यंत फलदायक** बनाएगा, और उससे कई **राजा और राष्ट्र निकलेंगे**।

यह शब्द "फलदायक" अकसर "बढ़ाने" (17:2)। के साथ आता है। यह शब्द प्रथम पुरुष और स्त्री को परमेश्वर द्वारा दी गयी पहली आज्ञा की प्रतिध्वनि या गूँज है, "और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ" (1:28)। यही बात नूह और उसके पुत्रों से भी कही गयी थी जल प्रलय के बाद (9:1, 7)। आदम और नूह की तरह अब्राहम भी इतिहास के एक नए युग के द्वार पर खड़ा था। मानव जाति को आशीष देने की परमेश्वर की आरंभिक योजना दुनिया में पाप के आ जाने के कारण खराब हो गयी थी। जल प्रलय के बाद, नूह के परिवार की धार्मिकता ऐसे संसार में, जो दुष्टता से शुद्ध हुई थी, फिर से क्षीण होने लगी। परमेश्वर की अब्राहम को "अत्यंत बढ़ाने" की प्रतिज्ञा उसके फलदायक होने की क्षमता के प्रावधान को दर्शाती है - सिर्फ़ इस विचार के साथ नहीं कि उससे "राष्ट्र" और "राजा" निकालेंगे, परंतु उसे इस काबिल बनाने के साथ वह परमेश्वर के "भूमंडल के सारे कुल" को आशीष देने की शुरुवाती प्रतिज्ञा के पूरे करने में अपना योगदान दे सके (12:2, 3)।

यह प्रतिज्ञा कि अब्राहम के वंश से राजा निकल कर आएंगे "एक महान राष्ट्र की प्रतिज्ञा" को पूरा करते हुए नज़र आ रही थी (12:2), पर इसका यह भी अर्थ था कि स्वतंत्र राष्ट्र भी इससे निकल कर आयेंगे। हालांकि अब्राहम कभी राजा नहीं बना परंतु वह बहुत से राजवंशों का जनक बना। उत्पत्ति इस प्रतिज्ञा को एदोम के राजा और प्रधानों में तेज़ी से पूरे होने में प्रकट करती है (36:9-43) और इनके भविष्य के शासक बनने का संकेत भी देता है, जो यहूदा के "राजदंड" को दी गयी आशीषों का एक भाग है (49:10)।

आयत 7. आगे, परमेश्वर ने इस बात की प्रतिज्ञा की कि वह अब्राहम और उसके वंशज के साथ (अपनी) **वाचा स्थापित करेगा** ... एक अनंत वाचा जो **पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहेगी**। इस वाचा की एक विशेषता यह भी थी कि यहोवा उनके साथ उनके **परमेश्वर** के रूप में एक आंतरिक या घनिष्ठ संबंध स्थापित करेगा। नूह से की गयी प्रतिज्ञा से अलग जिसमें, जो सबके लिए सामान्य था "सभी जीव जंतु" से "सभी जीवित प्राणी" और "युग-युग की पीढ़ियाँ" (9:9-12, 15, 16), यह वाचा सिर्फ़ अब्राहम और उसकी **संतान** के लिए थी जो सारा से उत्पन्न होंगी। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है प्रतिज्ञा भी परिवार की एक शाखा से इसहाक और उसके बाद याकूब तक पहुँचती है। एसाव और उसके बच्चे इसमें

शामिल नहीं थे, साथ ही अब्राहम की वे संतान जो हाजिरा और कतुरा से उत्पन्न हुई थीं, वे भी इस प्रतिज्ञा के अंतर्गत नहीं आते थे।

आयत 8. अपने नए सन्देश में प्रभु ने यह प्रतिज्ञा की, कि वह अब्राहम को ठहरने के लिए **भूमि देगा**, अर्थात **कनान की सारी भूमि**। यह भेंट सिर्फ़ अब्राहम को ही नहीं परंतु उसके सारे **वंशज को हमेशा-हमेशा के लिए दिया गया था**। आखिर में, परमेश्वर ने अब्राहम और उसकी संतान के साथ व्यक्तिगत संबंध के वादे को पुनः दोहराया; वह उनका **परमेश्वर बनना** चाहता था "युग-युग उनकी निज भूमि" और "कनान की भूमि" के लिए की गयी प्रतिज्ञा को समझने में गलती हुई उन्हें लगा यह यहूदियों को दी गयी बेशर्त और अटल प्रतिज्ञा है। फिर भी, हमने देखा है की "अनंतकाल या हमेशा" के लिए इब्रानी शब्द עוֹלָם *(ओलाम)* का अकसर अर्थ "युग" समझा जाता है। ऐसा युग कभी-कभी तीन दिन जितना छोटा भी हो सकता है,[8] या सारे जीवन के लिए[9] या किसी अनिश्चित समयकाल के लिए भी हो सकता है, यह सब कुछ सन्दर्भ पर निर्भर करता है। नया नियम इस बात को स्पष्ट रूप से दर्शाता है की शारीरिक इस्राएल के साथ परमेश्वर का विशेष संबंध समाप्त हो चूका है। आज परमेश्वर के लोग "व्यवस्था के आधीन नहीं है" अर्थात मूसा की व्यवस्था (रोमियों 6:14; 7:4, 6)। मसीही लोग यीशु के प्रायश्चित की मृत्यु के द्वारा नई वाचा में भाग ले सकते हैं और पुरानी वाचा अप्रभावी हो गई है (इब्रा. 7:22-25; 8:6-13; 9:11-17; 10:9, 10)। मसीही विधान में जाति भेद या अंतर मान्य नहीं है। सुसमाचार सबके लिए है (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16), और जो कोई भी मसीह में विश्वास लाये और बपतिस्मा ले वह वाचा के अनुसार "अब्राहम की संतान" होने का अधिकार पायेगा (गला. 3:26, 27, 29)।

वाचा का चिन्ह: खतना (17:9-14)

[9]फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, तू भी मेरे साथ बान्धी हुई वाचा का पालन करना; तू और तेरे पश्चात तेरा वंश भी अपनी अपनी पीढ़ी में उसका पालन करे। [10]मेरे साथ बान्धी हुई वाचा, जो तुझे और तेरे पश्चात तेरे वंश को पालनी पड़ेगी, सो यह है, कि तुम में से एक एक पुरुष का खतना हो। [11]तुम अपनी - अपनी खलड़ी का खतना करा लेना; जो वाचा मेरे और तुम्हारे बीच में है, उसका यही चिन्ह होगा। [12]पीढ़ी पीढ़ी में सिर्फ़ तेरे वंश ही के लोग नहीं पर जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हों, अथवा परदेशियों से रूपा देकर मोल लिये जाए, ऐसे सब पुरुष भी जब आठ दिन के हो जाए, तब उनका खतना किया जाए। [13]जो तेरे घर में उत्पन्न हो, अथवा तेरे रूपे से मोल लिया जाए, उसका खतना अवश्य ही किया जाए; सो मेरी वाचा जिसका चिन्ह तुम्हारी देह में होगा वह युग युग रहेगी। [14]जो पुरुष खतनारहित रहे, अर्थात जिसकी खलड़ी का खतना न हो, वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए, क्योंकि उसने मेरे साथ बान्धी हुई वाचा को तोड़ दिया।

आयत 9. तू भी वाचा सम्बंधित कर्तव्य के दूसरे खंड को प्रकट करता है (देखे 17:4, 15)। 17 का 1 से 8 में, **परमेश्वर** ने कई "मैं करूँगा" वाक्य दिए है; परन्तु यहाँ **अब्राहम** वस्तु नहीं परन्तु क्रिया का विषय बन गए। यद्यपि प्रभु ने वाचा का आरम्भ अपने प्रेम और अनुग्रह में होकर किया, उन्होंने कुलपति और उसके वंश से, इस असाधारण रिश्ते का हिस्सा होने के कारण, आज्ञाकारिता की उपेक्षा रखी। उनके लिए परमेश्वर की सिर्फ़ यही साधारण कामना थी की वह उसकी **वाचा में बने रहे**; परन्तु उस आदेश से उनका क्या अर्थ था उसका विश्लेषण देना अभी बाकी था।

आयतें 10, 11. यहोवा दोहराते हैं की **वाचा** का हिस्सा अब्राहम और उसके **वंशज** है। वाचा की आज्ञा की केन्द्रीयता यह थी की अब्राहम के घराने के **प्रत्येक पुरुष** का **खतना किया जाये। शरीर का** खतना, परमेश्वर के साथ **वाचा के चिन्ह** के रूप में उपयुक्त होगा। प्रत्येक वंशज भविष्य में भी खतना के आधीन होगा और यह चिन्ह उनके देह में बनी रहेगी।

हम खतना के अनुष्ठान की उत्पत्ति से अज्ञात है, किन्तु पुरात्विक खुदाई से, खतना किए जा रहे सीरियन योद्धाओं का चित्रण पाया गया है, जो तीसरी सहस्राब्दी ई.पू.[10] में पाए जाते थे। इस क्रिया का प्राथमिक मिस्री प्रमाण एक सीधे पत्थर/खम्बे पर, करीबन तेईसवीं सदी ई.पू. में, पाया गया जिसपर 120 पुरुषों[11] के खतने का विवरण अंकित है। कुछ कनानी और अरबी समूह भी पाए गए है, जिनमें खतना की प्रथा को मान्यता दी जाती थी (यिर्म. 9:25, 26), किन्तु मेसोपोटामिया (अब्राहम का वास्तविक वास स्थान) और पलिश्ती (यूनानी द्वीप) में नहीं दी जाती थी (न्यायियों 15:18; 1 शमूएल 17:26, 36)। कुछ प्राथमिक प्रमाण यह दर्शाते है की खतना की प्रथा का प्रचलन दुष्ट आत्माओं से बचने, प्रौढ़ता के मार्ग की ओर यौवन के पड़ाव पर या विवाह[12] की तैयारी के रूप में किया जाता था।

तथापि अब्राहम और उसकी भावी पीढ़ी के लिए तो यह एक धार्मिक क्रिया या यहोवा के साथ एक आत्मिक सम्बन्ध का चिन्ह रहा होगा। क्योंकि दूसरे देशों में भी खतना की प्रथा चलती थी, और वस्त्र गुप्त अंगों को छिपा लेते थे, यह चिन्ह अन्य लोगों द्वारा भांपा नहीं जा सकता था। यह कुछ असामान्य प्रतीत हो सकता है, क्योंकि पिछले चिन्ह जो यहोवा ने उत्पत्ति में दिए, वह लोगों द्वारा देखे जा सकते थे; जिनमें आकाश की ज्योतियाँ, जो 1:14 में पाई जाती है, कैन के लिए चिन्ह, जो 4:15 में पाया जाता है और मेघधनुष, जो 9:8-17 में पाया जाता है। परमेश्वर ने खतना की आज्ञा निःसंदेह एक ख़ास चिन्ह के रूप में मनुष्य के हित के लिए दी थी। जब भी मनुष्य को उसकी देह का अहसास होगा, तब उसे परमेश्वर की वाचा का व्यक्ति होने का स्मरण होगा। खतना शरीर में एक ऐसा चिन्ह था जो उन्हें याद दिलाता था की उनकी पहचान क्या थी: चुने हुए, बुलाये हुए, अशिष्ट और जिन्हें यहोवा द्वारा दिव्य भाग्य दिया गया है।

आयतें 12, 13. खतना के विषय में यह अनुदेश था की **हर नर** बच्चे का खतना, जब वह **आठ दिनों** का हो जाये, किया जाये (देखें 21:4) इस आदेश में सभी शिशु लड़कों को जो अब्राहम के **परिवार में पैदा हुए** हो, चाहे वह स्वतंत्र से हो या फिर वह उसके दासों के पुत्र हो। यदि अब्राहम के वंशज ने किसी पुरुष को विदेशी से खरीदा हो तो उस सेवक का भी, खरीद पूरी हो जाने के पश्चात, खतना होना अनिवार्य है, ताकि वह भी घराने का हिस्सा बन सके। इस **खतना की वाचा** को एक अनंत वाचा के सामान होना था (टिप्पणियां देखे 17:8 पर)।

आयत 14. अपनी आज्ञा को बल देने के लिए यहोवा ने यह वर्णित किया कि यदि उन्हें घराने में कोई भी **नर खतना रहित** दिखा तो वह उसे गंभीर रूप से **वाचा** का उल्लंघन मानेंगे। जो वयस्क व्यक्ति खतना रहित होंगे उनके लिए एक कठोर परिणाम की चेतावनी दी गयी, **"कि उनको अपने लोगों में से नष्ट किया जाये।"** कुछ ज्ञानियों का मानना है की, "नष्ट किए जाने" כָּרַת *(कारात)* का अर्थ सामान्य रूप में अपनी जाती से अलग करना है, परंतु यह दृष्टिकोण प्रेरक नहीं है। एक विदेशी नर जो सेवक के रूप में यहूदियों के घर बेचा गया, वह तो पहले से ही अपने लोगों से "नष्ट [अलग] किया गया।" सामान्य रूप से "नष्ट करने" का अर्थ मृत्यु दंड था, फिर चाहे वह मनुष्य द्वारा किया जाये या फिर परमेश्वर द्वारा (लैव्य. 18:29; 19:8; 20:3, 5, 6, 17, 18; 1 शमूएल 28:9; 1 राजा 11:16)। इस वाक्य का प्रमाण हमें मिलता है, जब *कारात* को अन्य वाक्यों के साथ जोड़ा जाता है, और मृत्यु दंड स्पष्ट रूप से सामने आते है (निर्गमन 31:14; लैव्य. 20:2-5; 23:29, 30; यहेज. 14:8, 9)। हर उस व्यक्ति को ही यहूदी घराने का हिस्सा बने इस वाचा की गंभीरता स्पष्ट रूप से बतानी अनिवार्य थी। यह खतना जो जीवन और मृत्यु का मामला था, एक सच्चे परमेश्वर के साथ सम्बन्ध और उस सम्बन्ध की महत्वपूर्णता और आदर का शारीरिक चिन्ह था।

सारै के लिए एक नया नाम और इसहाक का वादा (17:15-22)

15फिर परमेश्वर ने अब्राहम से कहा, तेरी जो पत्नी सारै है, उसको तू अब सारै न कहना, उसका नाम सारा होगा। 16और मैं उसको आशीष दूँगा, और तुझ को उसके द्वारा एक पुत्र दूँगा; और मैं उसको ऐसी आशीष दूँगा, कि वह जाति जाति की मूलमाता हो जाएगी; और उसके वंश में राज्य राज्य के राजा उत्पन्न होंगे। 17तब अब्राहम मुँह के बल गिर पड़ा और हँसा, और अपने मन ही मन कहने लगा, क्या सौ वर्ष के पुरुष के भी सन्तान होगा और क्या सारा जो नब्बे वर्ष की है पुत्र जनेगी? 18और अब्राहम ने परमेश्वर से कहा, इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे! यही बहुत है। 19तब परमेश्वर ने कहा, निश्चय तेरी पत्नी सारा के तुझ से एक पुत्र उत्पन्न होगा; और तू उसका नाम इसहाक रखना: और मैं उसके साथ ऐसी वाचा बाँधूंगा जो उसके पश्चात उसके वंश के लिये युग युग की वाचा होगी। 20इश्माएल के विषय में भी मैं ने तेरी सुनी है: मैं उसको भी आशीष दूँगा, और उसे फलवन्त और अत्यन्त ही बढ़ा दूंगा; उससे बारह प्रधान उत्पन्न होंगे, और मैं

उससे एक बड़ी जाति बनाऊंगा। 21परन्तु मैं अपनी वाचा इसहाक ही के साथ बाँधूंगा जो सारा से अगले वर्ष के इसी नियुक्त समय में उत्पन्न होगा। 22तब परमेश्वर ने अब्राहम से बातें करनी बन्द कीं और उसके पास से ऊपर चढ़ गया।

इस अध्याय के पूर्व, परमेश्वर ने अब्राहम को एक पुत्र का वायदे दिया था, किन्तु सारा उसकी माँ होगी, इसके विषय में कुछ कहा नहीं गया था। यही कारण रहा होगा की सारा अब्राहम को विश्वास दिला सकी कि हाजिरा द्वारा पुत्र उत्पन्न करना ही परमेश्वर की आज्ञा को पूरी करने का सही ज़रिया था। किन्तु 16 अध्याय में यहोवा इस तर्क को पूर्ण रूप से ख़ारिज कर देते हैं, वह आश्वासन देते हैं की सारा भी इस भावी पीढ़ी का हिस्सा होगी।

आयतें 15,16. "**सारै** है," वाचा के तीसरे खंड को अंकित करता है (देखे 17:4, 9)। परमेश्वर के दिव्य वायदे ने सारा को **आशीषित** करने और उसके द्वारा अब्राहम को **पुत्र देने** के उनके प्रकाशन ने एक नया मोड़ लिया। सर्वप्रथम, परमेश्वर ने वंश के प्रधान को सूचना दी की उसकी पत्नी को एक नया नाम दिया जायेगा। वह अब उससे सारै ना बुलाये; **उसका नाम सारा होगा**। जब परमेश्वर ने अब्राहम का नाम बदला, तब हम देखते हैं की उन्होंने कारण स्पष्ट किया, किन्तु उसकी पत्नी का नाम बदलते समय, परमेश्वर कोई कारण स्पष्ट नहीं करते। वस्तुतः सारा सिर्फ़ सारै के लिए एक अन्य शब्द विन्यास है, जिसका अर्थ राजकुमारी है। यह नया नाम आशीष में उल्लेखित राजाओं के अनुरूप में देखा जा सकता है। परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार वह **राज्यों की माता होगी और मनुष्यों के राजा उससे उत्पन्न होगे**।

आयत 17. इन शब्दों को सुनते ही **अब्राहम** परमेश्वर के सम्मुख मुँह के बल धरती पर **गिर पड़ा और हँसने लगा**, क्योंकि यह वायदा असंभव प्रतीत हो रहा था। वह जानता था की उसकी और सारा की माता पिता बनने की प्राकृतिक उम्र ढल चुकी थी। इसलिए, वह परमेश्वर से प्रश्न करता है कि कैसे **एक सौ वर्ष का मनुष्य** पिता और **एक नब्बे वर्ष की स्त्री** एक **बालक** को जन्म दे सकती है।

आयत 18. अब्राहम की दलील परमेश्वर के सम्मुख यह थी, **"इश्माएल तेरी दृष्टि में बना रहे!"** प्रभाव में वह यह मांग रहा था, "इतने सालों के इंतज़ार के पश्चात, हे परमेश्वर, क्या आप इस समस्या के उचित उपाय को स्वीकार नहीं करेंगे और मेरे पुत्र इश्माएल के द्वारा अपने दिए हुए वायदे को पूरा नहीं करेंगे, की वह आपका चुना हुआ बीज बनकर आपकी सेवा करे?"

आयत 19. अब्राहम की दलील पर परमेश्वर की प्रतिक्रिया दृढ़ और ज़ोरदार फटकार थी **"नहीं, किन्तु"** אֲבָל *(बल)* के रूप में देखी जा सकती है। वह इश्माएल को दिव्य रीति से नियुक्त की गयी भूमिका के लिए अस्वीकार करते हुए 17:16 में दिए हुए वाक्य को दुहराते है: कि **पुत्र सारा** से जन्मेगा। इस प्रतिज्ञा को समझाने के लिए, **परमेश्वर** ने अब्राहम को उस पुत्र का नाम **इसहाक** יִצְחָק *(यित्सचाक)* रखने को कहा, जो शब्दों का खेल है, "और [वह] हंसा" וַיִּצְחָק *(वायित्स्चाक)* 17:17 में। वायदे का पुत्र जो नाम लेने वाला था वह उसके पिता

की हंसी और परमेश्वर के वायदे पर अविश्वास का स्मरण कराती रहेगी (देखें 18:12; 21:3, 6)। इससे पूर्व परमेश्वर की अनंत वाचा का हिस्सा सिर्फ़ अब्राहम और उसके वंशज थे (17:7); किन्तु अब, परमेश्वर ने **वाचा को विस्तृत करते हुए** इसहाक और **उसके बाद उसके वंशज को भी** शामिल किया।

आयत 20. फिर परमेश्वर ने अब्राहम की **इश्माएल** के लिए चिंता को संबोधित करते हुए कहा, **"मैंने तेरी सुनी है।"** पुनः नामों पर शब्दों का खेल सामने आता है, "इश्माएल" का अर्थ "परमेश्वर सुनता है" (16:11 पर टिप्पणियाँ देखें)। परमेश्वर एक तंग पिता को यकीन दिलाते हैं कि, यद्यपि उन्होंने हागार द्वारा जन्मे उसके पुत्र को वायदे के वारिस होने के लिए अस्वीकार किया है, उन्होंने इश्माएल को भविष्य की आशीषों के लिए अयोग्य नहीं ठहराया। न सिर्फ़ यह, उन्होंने इश्माएल और उसके वंशज को **आशीष देने और संख्यावृद्धि करने** का वायदा भी दिया। वह उसे बारह शासकों का पिता बनाएँगे (जिसका अर्थ है बारह गोत्रों का; देखें 25:12-18) और **उससे एक महान राज्य बनाऊँगा**। यह वाक्य एक महत्वपूर्ण जोड़ था पिछले वायदों के लिए जो परमेश्वर ने हागार और इश्माएल के विषय में दी (16:11, 12)।

आयत 21. इसहाक के लिए जो वायदा परमेश्वर ने दिया वह उसके जन्म से पूर्व हुआ, **किन्तु** उनकी दिव्य प्रतिज्ञा जो इश्माएल (17:20) के लिए थी, वह उसके जन्म के पश्चात पायी गयी। इसके अलावा, यह विरोधसूचक है, किन्तु अब्राहम के दोनों पुत्रों के आशीष के बीच में एक विषमता को रेखांकित करती है। **मेरी वाचा**, जो 17:21 की शुरुवात में पाया जाता है, **इसहाक** और इश्माएल को दिए गए वाचा के वायदे को भी विशिष्ट कर देता है। जब परमेश्वर अपनी इच्छा की **सारा** इसहाक की माता होगी, इसी मौसम में **अगले साल व्यक्त कर दिया**, उन्होंने आगे इस बात पर किसी भी प्रकार के बातचीत के लिए दरवाज़े बंद कर दिये।

आयत 22. यह सब कुछ विस्तार से बताने के पश्चात, सभा समाप्त हुई। और परमेश्वर का प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हो गया, जैसे ही **प्रभु अब्राहम से ऊपर चले गए**।

वाचा पर मुहर लगाना: ब्राहम के घराने का खतना (17:23-27)

[23]तब अब्राहम ने अपने पुत्र इश्माएल को लिया, उसके घर में जितने उत्पन्न हुए थे, और जितने उसके रुपये से मोल लिये गए थे, अर्थात उसके घर में जितने पुरुष थे, उन सभों को लेके उसी दिन परमेश्वर के वचन के अनुसार उनकी खलड़ी का खतना किया। [24]जब अब्राहम की खलड़ी का खतना हुआ तब वह निन्यानवे वर्ष का था। [25]और जब उसके पुत्र इश्माएल की खलड़ी का खतना हुआ तब वह तेरह वर्ष का था। [26]अब्राहम और उसके पुत्र इश्माएल दोनों का खतना एक ही दिन हुआ। [27]और उसके घर में जितने पुरुष थे जो घर में उत्पन्न हुए, तथा जो परदेशियों के हाथ से मोल लिये गए थे, सब का खतना उसके साथ ही हुआ।

आयतें 23-25. वाचा की कथा के अगले भाग में हम परमेश्वर की आज्ञा के प्रति अब्राहम की अनुक्रिया को देखते हैं। एक साल के अंदर ही सारा द्वारा पुत्र प्राप्ति का परमेश्वर से जो वायदा उससे मिला, उससे उसका विश्वास पुनर्जीवित हो उठा। मनुष्य की दृष्टिकोण से, संभावित है की, यह वाकया असंभव प्रतीत हो रहा था, उसने अपने घराने के सभी पुरुषों की खतना **प्रक्रिया एकाकार शुरू कर दी** (देखें 17:26)। **अब्राहम** सारी आज्ञाओं का नियमित रूप से पालन करते हुए उन्हें फटाफट करता गया, जबकि वह **निन्यानवे वर्ष का था**। अब्राहम के घराने की खतना प्रक्रिया में **इश्माएल**, जो हाजिरा द्वारा **उसका पुत्र** था, भी शामिल था। वह उस समय **तेरह साल का था**।

आयतें 26, 27. परमेश्वर कभी नहीं चाहते थे की बाइबल से सम्बंधित विश्वास सिर्फ़ मानसिक प्रतिबद्धता, बिना आज्ञाकारिता के देखी जाये। परमेश्वर ने जो आज्ञा दी थी उसका तुरंत ही पालन किया जाना अनिवार्य था और **अब्राहम** ने आज्ञाकारिता बयान की। **उसी दिन**, वह, **उसका पुत्र इश्माएल** और **उसके घराने के सारे पुरुषों का ... खतना हुआ**। तथापि कुलपति खतना द्वारा अपने उद्धार को कमाने की कोशिश नहीं कर रहा था। इसके विपरीत, परमेश्वर की कृपा अब्राहम की कहानी में हमेशा देखी जा सकती हैं, चाहे उसकी आज्ञाकारिता और विश्वास बड़े हो या फिर कम हुए हो। फिर भी, खतना की पूर्ण अनिवार्यता, परमेश्वर के साथ एक अच्छे संबंध के लिए समझाई जा चुकी थी। और यदि अब्राहम के वंशज या उसके घराने का कोई भी खतना रहित पाया गया, तो उससे परमेश्वर के लोगों में से नष्ट किया जाना आवश्यक है - क्योंकि परमेश्वर ने कहा, "इसने मेरी वाचा को तोड़ा है" (17:14)।

अनुप्रयोग

अपने विश्वास का विस्तार करना (अध्याय 17)

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ एक वाचा की स्थापना की और 15 अध्याय में उससे एक गंभीर संस्था के साथ मुहरबंद कर दिया; तथापि, प्रतिज्ञा के पुत्र के जन्म के पूर्व, कुछ विस्तार होना बाकी था। बलिदान के चढ़ावे ने वाचा की ओर परमेश्वर की दृढ़ प्रतिबद्धता को अब्राहम और उसके वंशज के प्रति प्रमाणित कर दिया, किन्तु यह एक निजी मामला था, जो किसी और ने नहीं देखा। आगे अब, अब्राहम की ओर से थोड़ी सी ही क्रिया आवश्यक थी; उससे मात्र चढ़ावे का ध्यान, और परमेश्वर को ग़ौर से देखना, जो उन टुकड़ों के बीच में से, जलती हुई मशाल के समान, होकर निकल गए, वाचा का आरम्भ और आश्वासन देते हुए। वास्तव में, परमेश्वर ने अपने वाचा के साथी पर कोई भी आज्ञा या ज़िम्मेदारी नहीं डाली।

अब समय आ पहुंचा था की अब्राहम ईश्वरीय आज्ञा को सार्वजनिक रीति से निभाए, जिसमें सब बातें सम्मिलित हों और जो उसकी आने वाली पीढ़ियों में भी ज़ारी रहेंगी। 15 अध्याय से, जब परमेश्वर ने स्वयं अब्राहम से वाचा बांधी,

तेरह साल हो चुके थे, और परमेश्वर अब उसकी धार्मिक समझ को बढ़ाना चाहता था। वह चाहते थे कि अब्राहम को उनके ईश्वरीय स्वभाव के बारे में विशेष ज्ञान हो। और परमेश्वर यह भी चाहता था कि कुलपति उसकी ईश्वरीय योजना के विषय में अपनी समझ को बढ़ाए। इस उद्देश्य से वह बताता है कि उसके ईश्वरीय अनुग्रह के द्वारा अब्राहम और उसके वंशज कैसे होंगे और अपनी मंजिल पाने के लिए उन्हें क्या करना होगा।

परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करता है (17:1-8)। परमेश्वर ने अब्राहम के साथ जो वाचा बांधी थी, उसको नवीकृत और विस्तृत कई तरीकों से किया।

1. परमेश्वर ने अब्राहम को अपने दिव्य स्वभाव के बारे में बेहतर ज्ञान, अपने एक नए नाम के साथ प्रकट किया, *'एल शदाई*, अर्थात, "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" (17:1)। आज कई लोग यह सोचते है कि, "नाम में क्या रखा है? अगर हम गुलाब को किसी और नाम से बुलाये, फिर भी वह सुगन्धित गंध ही देगा।"[14] तथापि, बाइबल के समय में, नाम बहुत ही महत्वपूर्ण होते थे; लोग अपने पूर्वजों के नाम का महत्व, अपने नाम का महत्व, अपने बच्चों के नाम का महत्व, और खास कर अपने ईश्वरों के नाम के महत्व को जानते और समझते थे।

जिस समय परमेश्वर ने अब्राहम को दर्शन दिया, उस समय अब्राहम निन्यानवे वर्ष का था (17:1); जब परमेश्वर ने अब्राहम को ऊर को छोड़कर, कनान देश जाने की आज्ञा दी, तब से लेकर दर्शन के बीच तक करीबन साठ या सत्तर वर्ष बीत गए होंगे। परमेश्वर ने अब्राहम को मेसोपोटामिया की एक मूर्तिपूजक संस्कृति से बाहर निकालकर स्वयं को एक सच्चे परमेश्वर के रूप में अब्राहम पर प्रकट किया। समय के साथ, परमेश्वर ने स्वयं को और अधिक प्रकट किया, "यहोवा" और "सबसे ऊँचे परमेश्वर" के रूप में (14:22)।

परमेश्वर के अब्राहम को बुलाने के पश्चात कई वर्ष बीत चुके थे, और परमेश्वर ने जो प्रतिज्ञा दी थी उसका महत्वपूर्ण हिस्सा अभी अधूरा था, जिसके चलते शायद अब्राहम का विश्वास भी थक रहा था। जो वंशज आकाश के तारों के समान होंगे, वह अब तक कहाँ है? परमेश्वर के वायदे के अनुसार, वह महान देश कहाँ है? कानन पर जो स्वामित्व का वायदा परमेश्वर ने दिया था, क्या वह सचमुच होगा, और यदि होगा तो इस बात पर कैसे विश्वास किया जाये? उसके पास इन सब बातों का कोई विलेख नहीं था। और ना ही वह समझ पाया कि वह कैसे धरती पर सभी परिवारों के लिए आशीष का कारण बनेगा। कुलपति को जिसकी सबसे ज़्यादा आवश्यकता थी, वह था परमेश्वर को और बेहतर तरीके से जानना। तथापि यहोवा ने स्वयं को *'एल शदाई*, सर्वशक्तिमान और वह जो अपने सभी वायदों को पूरा करने की क्षमता रखता है, के रूप में प्रकट किया।

पहली सदी फिलिस्तीन में भी यहूदियों की परिस्थिति पिता अब्राहम की परिस्थिति का समरूप थी। वह साठ सत्तर सालों से नहीं, बल्कि, सदियों से मसीहा (अभिषिक्त राजा) जो आने वाला था, उसके आने का इंतज़ार कर रहे थे। वह यह विश्वास करते थे की वह रोमियों को उनके कठपुतली जैसे राजाओं और

हेरोदेस के साथ बाहर निकलेगा और वायदे के देश पर यहोवा की प्रभुता को स्थापित करेगा। इस मसीहा से यह अपेक्षा थी, कि वह अपने लोगों को छुड़ाएगा और उन पर राज करेगा, जैसे की दाऊद राजा के समय में हुआ था (यिर्म. 23:5, 6; 33:14-16; यहेज. 34:23-27)। किन्तु यह भविष्यवाणी, यहूदियों की कल्पना के अनुसार कार्यान्वित ना हुई। बार-बार कई पुरुष उठे, जिन्हें मसीहा या छुड़ानेवाला माना गया, किन्तु यह स्वप्न टूट जाता, जब उनके आंदोलनों को अन्यजाति के राजा कुचल देते (मत्ती 24:5, 24-26; प्रेरितों 5:35-39; 21:38)।

यह उस "यीशु" नाम का आंशिक रूप में वर्णन करता है, जिसके विषय में यूसुफ को बताया गया था कि वह यह नाम मरियम के पुत्र का रखे। मत्ती रचित सुसमाचार के अनुसार, जब यूसुफ मरियम को उसके गर्भवती होने की वजह से, चुपके से त्याग देने का विचार कर रहा था, तब प्रभु के स्वर्गदूत ने उसे बताया की जो उसके गर्भ में है, वह पवित्र आत्मा की ओर से है। स्वर्गदूत ने यूसुफ को बताया की शिशु का नाम "यीशु" Ἰησοῦς *(येसुस)* रखना, क्योंकि "वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा" (मत्ती 1:21)। नाम "यीशु," एक इब्री शब्द "येशुआ" יְהוֹשֻׁעַ *(येहोशुआ)* का यूनानी रूप है, जिसका अर्थ "परमेश्वर [यहोवा] उद्धार है।" बेशक ही, वह राजनैतिक या सैन्य छुटकारा नहीं था जो यीशु लाने वाले थे, किन्तु यहोवा का उद्धार तो पापों से होगा।

2. परमेश्वर ने वाचा को और विस्तृत करते हुए अब्राहम को चुनौती दी कि वह उनकी "उपस्थिति में चले" और "सिद्ध होता जाए" (17:1)। इस सत्य को आधार जानकर कि परमेश्वर "सर्वशक्तिमान प्रभु," वह जो "सर्व-प्रबल" है, उसे पूरे दिल से वचनबद्ध और पूरी ईमानदारी से अपने जीवन को व्यतीत करना था। दिव्य वायदे के पूरे होने में जो समय लग रहा था उसने कुलपति को हतोत्साहित कर दिया था। उसके विश्वास का नवीकरण आवश्यक था, ताकि वह अपने दिल और जीवन को परमेश्वर को पुनः समर्पित कर सके।

3. वायदे की दृष्टि में, परमेश्वर ने अब्राम का नाम "अब्राहम" रख दिया, जो यह बताता है कि वह "जातियों के समूह का मूल पिता ठहरेगा" और उसके वंश में से "राजा उत्पन्न" होंगे (17:4-6)।

4. परमेश्वर ने उन प्रतिज्ञाओं को दोहराया जो इन वंशजों को मिलेगी, "सारा कनान, युग-युग के लिए उनकी निज भूमि होंगी" (17:7, 8)। कुछ वायदों को दोहराया और दूसरों को उनमें जोड़ कर, परमेश्वर अब्राहम के विश्वास और उसकी दृष्टि को विस्तृत करना चाहते थे, ताकि वह मनुष्य के ज्ञान की सीमा से और अधिक उदारता के साथ भविष्य की बातों को समझ सके। उसने अभी तक इन ईश्वरीय आशीषों को महसूस नहीं किया था, किन्तु उसका अर्थ यह नहीं था की परमेश्वर उनको प्रदान करने के अयोग्य है। इस धार्मिक व्यक्ति को सीखना ज़रूरी था की परमेश्वर हमेशा अपने सभी वायदों को पूरा करते हैं और उनके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं हैं क्योंकि वह "सर्वशक्तिमान परमेश्वर" *('एल शदाई)* (देखें 18:10-14) हैं। यह भी आवश्यक था कि वह परमेश्वर पर भरोसा रखें और

वायदे के पूरे होने तक, जिसका कुछ हिस्सा वह अपने जीवन काल में न देख सकेगा, धीरज बनाये रखे।

प्रारंभिक मसीही - और उसके पश्चात की सभी पीढ़ियां - अब्राहम जैसी परिस्थिति में हैं। परमेश्वर ने कुलपति को बचाया (15:6; रोमियों 4:1-5) और उसे बहुतायत से अशिष्ट किया। इसहाक के जन्म और परमेश्वर के दिव्य वायदे के पूर्ण होने से पूर्व ही ये आशीषों उसकी थी इसी तरह हम जो मसीही में हैं उसके द्वारा पहले से ही बहुतायत से आशीषित है अब्राहम के आत्मिक वंशज (गला. 3:26-29; इफि. 1:3) के रूप में परमेश्वर के द्वारा हमने "आत्मा के प्रथम फल प्राप्त किए हैं" इस पर भी इस पतित दुनिया के बीच में हम "अंदर ही अंदर कराहते हैं और पुत्र के रूप में स्वीकृत होने के लिए और इस शरीर से छुटकारा पाने का बेसब्री से इंतज़ार करते है" (रोमियों 8:23)।

यीशु "सुसमाचार के द्वारा जीवन और अमरता को उजियाले में लाए" (2 तीमु. 1:10)। हम उसमें अनंत जीवन का पूर्व अनुभव करते हैं (यूहन्ना 3:36; 5:24; इब्रा. 6:4, 5), भले ही यह वायदा भविष्य के लिए हैं। हम पहले से ही बचाए गए हैं (1 कुरि. 15:1, 2), किन्तु जब तक मसीह दुबारा ना आये, तब तक हम अपने उद्धार का आनंद पूर्ण रीति से नहीं उठा सकते (रोमियों 13:11)। और उस समय, वह हम सबको अपने लिए इकट्ठा करेगा और एक बेहतर राज्य में ले जायेगा (यूहन्ना 5:28, 29; 1 कुरि. 15:22-26, 52-58; 1 थिस्स. 4:13-18)। दिव्य आशीषों के अनुभव को, अगर धार्मिक तौर से देखा जाये तो, "जो पहले से ही हैं और जो अभी नहीं हैं," भी कहा जा सकता है। अब्राहम की तरह, हमें भी परमेश्वर के सम्मुख विश्वास के साथ चलना है और सिद्ध होना है (17:1), चाहे जो वायदे परमेश्वर ने दिए हैं वह हमारे जीवनकाल में पूर्ण हों या न हों।

परमेश्वर ने हमें अलग किया (17:9-14)। परमेश्वर ने खतना को वाचा के चिन्ह के रूप में दिया। वह एक विशिष्ट निशान था जो प्रसव के अंग पर प्रदर्शित किया जाता था, क्योंकि वाचा ने अब्राहम और उसके वंशज को परमेश्वर के लिए अलग किया था। कुलपति के घराने के सभी पुरुषों की चमड़ी को हटाना अनिवार्य था, उनकी उम्र की परवाह किए बिना। नर शिशुओं के लिए, यह प्रक्रिया उनके जीवन के आठवें दिन पूर्ण की जानी थी (17:9-12)। अब्राहम के घर के सभी सेवकों का भी खतना अनिवार्य था, चाहे मुक्त पैदा हुए हो या दासत्व में (17:12, 13)। यह वाचा का चिन्ह उन सब पर लागू होना था जो अब्राहम के परमेश्वर पर विश्वास रखते और उसके प्रति भक्ति रखते थे और जो उन आशीषों का, जो उसके वंशजों को मिलनी है, हिस्सा हैं।

इसके अतिरिक्त, इस अनुष्ठान का अर्थ परमेश्वर के लोगों की पहचान, जिसका अर्थ हृदय का खतना है (व्यव. 10:16; 30:6; यिर्म. 4:4)। परमेश्वर के प्रति भक्ति से अपवित्रता, अनैतिकता और बुतपरस्ती कट जाती हैं। विद्रोही अवज्ञा, इस संबंध में बिल्कुल भी सहन नहीं की जानी थी; जो इस वाचा के चिन्ह के महत्व को ना समझे उन्हें परमेश्वर के लोगों में से नष्ट किया जायेगा (17:14)।

यद्यपि परमेश्वर के खतना करने की प्रथा पहले से ही थी, प्राचीन समय में कई जातीय समूह द्वारा इस प्रथा की प्रक्रिया का प्रदर्शन किया जाता था और इन बातों के पश्चात भी, खतना का महत्व अब्राहम के परिवार के लिए कम ना हुआ। यीशु के रोटी और दाखरस को अपने शरीर और लहू का प्रतिनिधित्व बताने से पूर्व ही, पहली सदी के लोगों के लिए रोटी और दाखरस का प्रतीकात्मक अर्थ हुआ करता था (मत्ती 26:26-28)। इसी तरह, इससे पूर्व की बपतिस्मा मसीही जनों के लिए यीशु मसीह की मृत्यु, उसके गाड़े जाने और पुनरुत्थान (रोमियों 6:1-6) का प्रतीक बने, कुछ धार्मिक समूह पहले से ही धुलाई की प्रक्रिया को महत्व देते थे। जैसे मुमकिन है कि समय के साथ बपतिस्मा और प्रभु भोज का धार्मिक महत्व खो जाये और यह अर्थहीन हो जाये, जैसे की खतना की प्रथा के साथ हुआ। पौलुस ने इस बात पर ज़ोर दिया कि शरीर के बाहरी खतना का महत्व कुछ भी नहीं हैं अगर हृदय का खतना परमेश्वर की आत्मा के द्वारा न हुआ हो (रोमियों 2:28, 29)।

पौलुस ने, कुलुस्सियों में, खतना और बपतिस्मा का वर्णन साथ किया। हालाँकि कुलुस्सियों में जो अन्यजाति में से मसीही बने थे, वह शरीर में खतना रहित थे, किन्तु प्रेरित इस बात की पुष्टि करता है कि उनका खतना "हाथों से नहीं," किन्तु उनका खतना "मसीह के द्वारा किया गया खतना" है (कुलु. 2:11)। फिर उसने व्याख्या की कि "मसीह के द्वारा खतना" तब होता है, जब कोई भी व्यक्ति शारीरिक रूप से (हाथों समेत) "बपतिस्मा में [मसीह] दफ़नाया जाता है" और "उसके साथ पुनः जीवित किया जाता हैं परमेश्वर के कार्यों पर विश्वास के द्वारा, जिसने उससे भी मुर्दों में से जिलाया" (कुलु. 2:12)। अंतः पौलुस इन भाइयों से कहता हैं की, यद्यपि "वह [अपने] अपराधों में और [अपने] शरीर में खतना रहित होने के कारण मरे हुए थे," एक आत्मिक खतना की प्रक्रिया के द्वारा उन्हें "[उनके] सभी अपराधों" से क्षमा और मसीह "के साथ पुनः जीवित" किया गया है (कुलु. 2:13)। कुलुस्सियों पर आत्मिक खतना की प्रक्रिया को करने वाले परमेश्वर स्वयं था, और वह आज भी हम पर यह करता है। जब हम विश्वास से उनकी आज्ञा का पालन करते हुए, मसीह से साथ स्वयं को दफ़नाते हैं बपतिस्मा के पानी में, तब वह हमारे हृदय के पापों को क्षमा (काट के अलग करना) करते हैं। बपतिस्मा के दौरान पश्चातापी मनुष्य प्रतीकात्मक और आत्मिक रूप से वह सब अनुभव करता है जो यीशु ने शारीरिक रूप से अनुभव किया। इस पापों की मृत्यु के द्वारा, एक नया मसीही अपने जीवन को नए पन के साथ व्यतीत करने के लिए उभरता है (रोमियों 6:3-6)।

परमेश्वर हमें आगे बढ़ाता हैं (17:15-22)। परमेश्वर ने वाचा के पूरे होने के लिए, एक नया और असंभव प्रतीत होने वाला वाहन नामित किया। अब्राहम को जो पुत्र प्राप्ति और अधिक संख्या में वंशज का वायदा दिया गया था, संकुचित कर-कर उसमें अब सिर्फ़ सारा, जो उसकी पत्नी थी, उसके वायदे के पुत्र की माता के रूप में शामिल की जा रही थी। हाजिरा के साथ यह प्रयोग करने के बाद इस

दम्पत्ति को यह पता चल चुका था कि सरोगेट माँ पर्याप्त नहीं होगी। सारा की वायदे के पुत्र की माता होना उतना ही महत्वपूर्ण था जितना अब्राहम का उसका पिता होना।

परमेश्वर कुलपति को एक पुत्र उसकी पूर्व बांझ पत्नी द्वारा देने वाले थे, और उसके एक चिन्ह के रूप में, परमेश्वर ने उसका नाम "सारे" से "सारा" में बदल दिया (17:15)। यद्यपि दोनों नामों में ज़्यादा अंतर नहीं था, अब्राहम को यह विचार की एक निन्यानवे वर्ष की स्त्री पुत्र जनेगी, कुछ विचित्र लगा। वह मुंह के बल ज़मीन पर गिर पड़ा और अविश्वास के कारण हंसने लगा, और फिर परमेश्वर को अपनी अलग एक योजना के बारे में बताने लगा, जो उसकी नज़र में ज़्यादा उचित थी पुत्र प्राप्ति और उसके पश्चात राज्यों और राजाओं को उत्पन्न करने के लिए भी - अर्थात् इश्माएल को उसके वारिस के रूप में पहचाना जाए (17:16-18)। बालक अब तेरह वर्ष का था, और अब्राहम आश्चर्य में था कि क्यों परमेश्वर उसे वायदे के पुत्र के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। निश्चित रूप से अब्राहम ढीठ बन रहा था। यह सिद्ध कर रहा था कि उसे बड़े विश्वास की आवश्यकता हैं, जैसे कि ऐसी परिस्थिति में, हममें से हर एक को आवश्यक होती है। किन्तु परमेश्वर को उसके सुझाव की ज़रूरत न थी, ठीक उसी तरह जैसे कि हमारी भी नहीं होती। परमेश्वर जानते थे की वह क्या कर रहे हैं और सब कुछ उनके नियंत्रण में था; फिर भी वह अब्राहम के विश्वास में की कमी के साथ धीरज धरे हुए थे, जैसे की वह हमारे साथ भी करते हैं।

इतने सालो में अपूर्ण वायदों के साथ संघर्ष करते हुए, राज्यों के पिता को एक बहुत ही मुश्किल पाठ सीखना था। अब्राहम को बाइबल में विश्वास का नायक कहा गया है, क्योंकि, यद्यपि उसे परमेश्वर के वायदे, जो सारा द्वारा पुत्र प्राप्ति थी, उसके पूर्ण होने की कोई राह दिखाई नहीं दे रही थी, उसके पास फिर भी विश्वास था। मनुष्य के दृष्टिकोण से, परमेश्वर ने जो वायदा दिया था, वह असंभव प्रतीत हो रहा था; किन्तु पौलुस कहता है कि अब्राहम ने परमेश्वर पर "विश्वास" किया, "जो मरे हुओं को जिलाता हैं, और जो बातें हैं ही नहीं उनका नाम ऐसा लेता है की मानो वे हैं" (रोमियों 4:17)। प्रेरित ने आगे बोलते हुए कहा, "उसने निराशा में भी आशा रखकर विश्वास किया, ताकि वह बहुत सी जातियों का पिता बन सके," भले ही "उसने अपने शरीर का विचार किया, जो अब मरे हुए के समान हो चुका था" और "साथ-ही-साथ सारा के गर्भ की मरी हुई दशा को भी" (रोमियों 4:18, 19)।

"निराशा में आशा" रखना हमेशा से ही परमेश्वर के लोगों के लिए एक चुनौती रही हैं। बाद में, जब इस्राएली मिस्र में थे, उन्हें अब्राहम, इसहाक और याकूब के परमेश्वर के कामों की मंद स्मृति ही थी; और वह मूर्तिपूजा और मिस्र के अन्य ईश्वरों को पूजने में लग गए (यहोशू 24:14)। यह लोग मृत आदमियों के समान हैं, जो इस दुनिया में किसी आत्मिक या शारीरिक उद्धार की आशा के बिना चले जा रहे हैं। आखिरकार परमेश्वर मूसा के द्वारा बीच में आता है, और

दस विपत्तियां मिस्रियों पर भेजता है ताकि वे उसके लोगों को बंधुवाई से छुड़ा सके और आज़ादी प्रदान करे। मिस्र गंभीर रूप से पीड़ित हुआ और इसके पश्चात फ़िरौन का घमंड भी टूट गया। उसने इस्राएलियों को आज़ाद करने के लिए निर्णय लिया। जब वह मिस्र से बाहर निकल रहे थे, तब राजा ने अपना मन बदल लिया और अपनी सेना उनके पीछे भेज दी। इब्री खुद को घेरे में देख सकते थे, क्योंकि, आगे विशाल समुद्र था और पीछे फ़िरौन की सेना; मनुष्य की दृष्टिकोण से छुटकारा, अब असंभव लग रहा था।

उस समय परमेश्वर ने बहुत ही अद्भुत रीति से हस्तक्षेप किया। उसने मूसा को यह अनुदेश दिया की वह कठोर आज्ञा सुनाये, जो उस समय इस्राएलियों को एक मृत्यु दंड की तरह सुनाई पड़ी होगी: (समुद्र) की ओर बढ़ो (निर्गमन 14:15)। जब मूसा ने अपनी लाठी उठाई और "समुद्र के ऊपर अपने हाथों को फैलाया," पानी दो भाग हो गया और दोनों तरफ़ पानी की एक दीवार सी बन गयी (निर्गमन 14:16, 21, 22)। और फिर उनके सम्मुख, ऊपर और पीछे एक बादल सा बन गया; और यह बादल रात को आग का खम्भा बन गया, जो उन्हें मिस्री सेना से, जो उनका पीछा कर रही थी, अलग कर रहा था (निर्गमन 14:19-24)। यह सब कुछ भी मनुष्य के दृष्टिकोण से असंभव ही था। जैसे ही इस्राएली उस "घोर अन्धकार से भरी हुई तराई" (भजन 23:4) में प्रवेश कर रहे थे, उन्हें यह विश्वास रखना था की परमेश्वर, मूसा के नेतृत्व में, कैसे भी उन्हें उस तराई में से सुरक्षित बाहर निकलेगा। जो एक समुद्री कब्र नज़र आ रही थी, वह उनके लिए, दूसरे किनारे की ओर, एक नए जीवन का मार्ग बन गयी। पौलुस बपतिस्मा के साथ, 1 कुरिन्थियों 10:1, 2 में इसी का प्रयोग करता हैं। एक असंभव छुटकारा परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा एक सच्चाई में बदल गया। इब्रानियों का लेखक यों लिखता है, कि "विश्वास ही के द्वारा," इस्राएलियों ने "लाल समुद्र को पार किया" (इब्रा. 11:29); किन्तु यह एक आज्ञाकारी विश्वास था जिसने उनके पैरों को उस रात में चलने के लिए तत्पर किया, जिसके पश्चात दूसरी छोर पर वह परमेश्वर के उद्धार का अनुभव ले सकें (निर्गमन 14:20, 22, 24)।

परमेश्वर अपेक्षा करता है की हम संकोच न करें (17:23-27)। अब्राहम ने परमेश्वर की वाचा से जुड़ी आज्ञा का तीव्रता से पालन किया। जब परमेश्वर ने वाचा का नवीकरण करते हुए उसे और सारा को नए नाम दिए और वायदे के पुत्र का नाम (इसहाक) भी प्रकट किया, तब उसमें विश्वास पुनः जागृत हुआ। अब्राहम यह जान कर उत्साहित था की यद्यपि इश्माएल उसका वारिस न होगा, फिर भी परमेश्वर की असीम आशीषें उस पर होंगी और वह उसे बारह शासकों का पिता बनाएगा और उससे एक महान जाति ठहराएगा (17:20)। विश्वास के पिता ने परमेश्वर के वाचा से जुड़ी नई बातों को अपनाने में ज़रा भी संकोच न किया। उत्पत्ति के लेखक के अनुसार, उसी दिन अब्राहम स्वयं खतना की प्रक्रिया

से गुज़ारा और अपने साथ-साथ इश्माएल और अपने घराने के सभी पुरुषों को भी खतना की प्रक्रिया के लिए तत्पर किया (17:23-27)।

जिस प्रकार अब्राहम ने परमेश्वर की आज्ञा को तुरंत ही माना, उसी प्रकार की आज्ञाकारिता परमेश्वर हमसे भी चाहते हैं। यह परमेश्वर के प्रति, जो अपने लोगों से प्रेम करते हैं, विश्वास और सराहना का प्रतीक हैं। परमेश्वर को हमारा ध्यान हैं और इसी कारण वह हमारी मार्गों में अगुवाई करते हैं, ताकि हम उनकी आशीषों को अनुभव कर सकें। एक प्रेमी स्वर्गीय पिता होने के कारण, वह हमेशा यह हमारी भलाई के लिए करते हैं, ताकि हमें, अपनी अवज्ञा के परिणामों को भुगतना न पड़े।

इस्राएलियों का परमेश्वर की आज्ञा को ना मानने का निर्णय, उनके कनान न जा पाने का कारण बना, और यह एक खतरनाक उदाहरण है परमेश्वर की आज्ञा मानने में हिचकिचाहट रखने के परिणामों का। वह लोग मूसा, हारून, कालेब और यहोशू के ख़िलाफ़ बुदबुदा रहे थे और उनका पथराव भी करना चाहते थे; किन्तु उनके विद्रोह की सीमा परमेश्वर के प्रति थी। उन्होंने उस पर यह आरोप लगाये की वह अपने दुष्ट इरादों के चलते उन्हें मिस्र से निकाल कर लाए ताकि उन्हें वन में तलवार से मार सकें (गिनती 14:1-10)। मूसा उनके लिए प्रार्थना करता था कि परमेश्वर उन्हें उनके कार्यों और बातों के लिए क्षमा करे जिसका कारण अविश्वास था। परमेश्वर ने इस जाति को क्षमा तो कर दिया, किन्तु उनके पापों का परिणाम यह था की वह चालीस साल वन में भटकते रहे, जब तक की यह बागियों की पहली पीढ़ी ख़त्म ना हो जाए। बहुत दुखद बात यह थी की इस्राएलियों के पास मिस्र से बाहर निकलने के लिए तो विश्वास था, किन्तु वह विश्वास इतना नहीं था कि वह परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए वायदे के देश में प्रवेश कर सकें (गिनती 14:19-35)। इब्रानियों के लेखक ने इस उदाहरण के द्वारा मसीही जनों को चेतावनी दी कि अविश्वास से भरे दुष्ट हृदय, जो हमें परमेश्वर से दूर कर देते हैं हममें ना हों, जैसा कि इस्राएलियों के पास था (इब्रा. 3:7-12)। उसने इस बात पर ज़ोर दिया की, परमेश्वर का अपने लोगों से चालीस साल तक क्रोधित रहने का कारण, कि "उनके शरीर वन में ही गिर गए," सिर्फ़ उनका अविश्वास था, जिसके कारण उन्होंने उसकी आज्ञा ना मानी (इब्रा. 3:17-19)।

सुसमाचार (शुभ सन्देश) पर तात्कालिक आज्ञाकारिता अत्यधिक महत्वपूर्ण है; इसमें सही समय की प्रतीक्षा या देरी नहीं की जा सकती। बचाव का विश्वास हमेशा एक आज्ञाकारी विश्वास होता है (यूहन्ना 3:36; इब्रा. 5:8, 9)। नए नियम में जब लोगों ने अपने पापों को मानकर, अपने जीवन में यीशु को अपने परमेश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते थे, तो वे बपतिस्मा को टालते नहीं थे। पिन्तेकुस्त के दिन, तीन हज़ार लोगों ने बपतिस्मा लिया था, वह ही दिन था जब उन्होंने पहली बार सुसमाचार सुना था (प्रेरितों 2:37-41)। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में यही तरीका अपनाया गया है, जैसे कि कई उदाहरण देखे जा सकते हैं।

सामरियों की व्याख्या में तत्काल आज्ञाकारिता पायी जाती है (प्रेरितों 8:12, 13), और कूश देश के अधिकारी के बदलाव में भी बताया गया है (प्रेरितों 8:35-39), शाऊल का हृदय परिवर्तन (प्रेरितों 9:17, 18; 22:12-16), कुरनेलियुस और उसका घराना (प्रेरितों 10:30-48), लुदिया और उसका घराना (प्रेरितों 16:13-15), फिलिप्पी के दरोगा और उसका घराना (प्रेरितों 16:25-34), और क्रिसपुस और उसका घराना (प्रेरितों 18:8)। लोगों को कभी भी परमेश्वर के अनुग्रह को परिकल्पित करके, सुसमाचार के न्योते को मानने में देरी नहीं करनी चाहिए। जैसा की पौलुस ने कुरिन्थियों कि कहा, "देखो, अभी वह प्रसन्नता का समय है; देखो, अभी वह उद्धार का दिन है" (2 कुरि. 6:2)।

समाप्ति नोट्स

[1]यह इब्रानी नाम कुछ अंग्रेज़ी बाइबल में "एल शद्दाई" के रूप में अनुवाद किया गया है (NJPSV; NJB)। [2]बाइबल के आलोचक उत्पत्ति में "यहोवा" के नाम के इस्तेमाल (12:8; 13:4; 14:22; 21:33; 22:14; 26:22, 25; 27:7; 28:16, 21) और निर्गमन 6:3 में परमेश्वर के कथन "मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम से इब्राहीम, इसहाक, और याकूब को दर्शन देता था, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन पर प्रगट न हुआ" के बीच संकट देखते है। बाद के लेखों में, परमेश्वर यह नहीं कह रहा था कि वह अपने लोगों पर अपना नाम "यहोवा" प्रकट नहीं करेगा बल्कि, इसके सन्दर्भ से यह पता चलता है कि परमेश्वर मिस्र मसे सामर्थ्य के छुडाने के द्वारा अपने इस नाम का बड़ा महत्व प्रकट करेगा (निर्गमन 3:14, 15), जैसे की दस विपत्ति भेजना और लाल सागर को दो भाग करना। यह नाम "यहोवा" (יהוה, *YHWH*) इब्रानी क्रिया (הָיָה, *hayah*) से लिया है। वह परमेश्वर है "जिससे सब कुछ है, जो सब करता है, और जिसके द्वारा सब कुछ होता है।" [3]विक्टर पी. हैमिलटन, "שָׁוְא," *TWOT* में, 2:907; देखें तल्मूड *हगिगाह* 12a. [4]जोन डी. लेवेंसन, "उत्पत्ति," इन *द जुइश स्टडी बाइबल*, एड. अदेले बर्लिन एंड मार्क ज्वी ब्रेत्लर (न्यू यॉर्क: आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 2004), 37. [5]जे. बार्टन पायने, "תָּמִים," *TWOT* में, 2:973-74. [6]यह सारे संकेत इस्राएल राष्ट्र की तरफ़ इशारा करते है अब्राहम के उन चुने हुए वंशज की तरफ़ अब्राहम, इसहाक और याकूब। [7]जे. बार्टन पायने, "אַבְרָהָם," *TWOT* में, 1:6. [8]भले ही योना सिर्फ़ "तीन दिन और तीन रातों" के लिए उस बड़ी मछली के पेट में था उसने कविता के रूप में यह कहा "मैं सदा के लिये भूमि में बन्द हो गया था" (योना 1:17; 2:6)। [9]हन्ना ने यह प्रतिज्ञा की, कि अगर उसे एक पुत्र (शमूएल) प्राप्त हो, तो मैं उसके जीवन भर के लिये यहोवा को अर्पण करूंगी - यह भाव "अनंतकाल" को दर्शाता है (1 शमूएल 1:11, 22)। [10]जैक म. साससन, "सिर्कुम्सिसीशन इन दा अन्किएन्त नियर ईस्ट," *जर्नल ऑफ़ बिब्लिकल लिटरेचर* 85, नॉ. 4(दिसम्बर 1966): 475-76.

[11]जॉन अ. विलसन, ट्रांस., "सिर्कुम्सिसीशन इन एग्य्प्त," इन *अन्किएन्त नियर ईस्टर्न टेक्स्ट्स रेअल्टिंग तो दा ओल्ड टेस्टामेंट*, 3द एड., एड. जेम्स बी. प्रित्चार्ड (प्रिन्सटन, न.ज.: प्रिन्सटन यूनिवर्सिटी प्रेस, 1969), 326. [12]रोबर्ट ग. हॉल, "सिर्कुम्सिसीशन," इन *दा एंकर बाइबल डिक्शनरी*, एड. डेविड नोएल फ्रीमैन (न्यू यॉर्क.: दौब्लेदय, 1992), 1:1025-26. [13]इन.आई.वी में "हाँ, किन्तु" का प्रयोग किया गया है, जो शायद मुमकिन है, किन्तु इस प्रसंग में मददगार होने से अधिक यह भ्रामक प्रतीत होता है। [14]विलियम शेक्सपियर *रोमियो एंड जूलिएट* 2.2.43-44.